हिन्दी की कालयजी कहानी 'गदल' में मानवीय मूल्य

डॉ. राजेंद्रसिंह आ. चौहान
सहयोगी प्राध्यापक एवं शोध निर्देशक,
स्नातक एवं स्नातकोत्तर हिंदी विभाग, बलभीम कॉलेज, बीड.

सामाजिक परिवर्तन का दौर बीसवीं सदी के आरंभ से ही चला था, परन्तु सन् पचास में विभाजन के बाद तो सारे नैतिक मूल्य गडबडा गये। पूर्वी बंगाल, पश्चिमी पंजाब और सिन्ध से जो शरणार्थी आये उनका बहुत कुछ लुट चुका था। अस्मत भी, अस्मान भी, अमानव भी और सपने भी। आदर्श के नाम से उन्हें चीढ़-सी थी। उनके पास ऐसा कुछ नहीं था जिससे वे मोल कर सकें जिसके सहारे से जिन्दगी जी सके। उनके सांस्कृतिक, नैतिक मूल्यों और सामाजिक मान्यताओं पर इन घटनाओं से ऐसा जबरदस्त झटका लगा कि आदमी अपने परिवार के सामने ही नंगा हो गया। नैतिकता के स्थान पर समाज में कालाबाजारी, रिश्वतखोरी पनपने लगीं। एक अजीब-सी बेचैनी और असंतोष फैल गया। आदर्श समाप्त हो गये। मूल्यों का विघटन होता गया।

आज का कहानीकार मूल्यों के प्रति किसी भी प्रकार का आग्रह नहीं रखता। सिर्फ प्रश्नवाचक भाव बनाये रखा जाता है। कथाकार की मूल्यों के प्रति अरुचि और मूल्यों में द्वन्द्व उभारने की कला हर किसी कहानी में स्पष्ट होती हैं। पुराने मूल्यों के प्रति मोह और न ये मूल्यों के प्रति आकर्षण का द्वन्द्व हमें कई कहानियों में मिलता हैं।

रांगेय राघव की कालजयी कहानी है 'गदल'। यह कहानी आस्था और नये मूल्यों को एक साथ संजोये हुए हैं। गदल का नारी रूप में अत्यंत दृढ, ज्वलंत, संघर्षशील व्यक्तित्व छिपा हुआ हैं। उसमें जितना विद्रोह है, उतनी ही प्रेम की स्निग्धता और तरलता हैं। कहानी नये मूल्यें की खोज की ओर पाठकों को ले जाती हैं। उपेक्षित और पिछडी जातियों के मूल्यों को समझने के लिए यह कहानी एक मील का पत्थर हैं।

यह कहानी खारी गूजर और लोहारों के बीच की है जो पिछडी जाति के हैं। गुना जब पचपन बरस में मर गया तब गदल का बेटा निहाल तीस साल का था। उसके बाल बच्चे थे। निहाल की दो बहने भी थीं, जो ब्याही गयी थीं। अंतिम पुत्र नरायन की बहू दूसरी बार माँ बनने वाली थी। डोडी गुन्ना का सगा भाई था। बहू बच्चे थे पर सब मर गये थे। वह अकेला रहा। उसने ब्याह नहीं किया। उनकी जाति में भाभी से ब्याह करने का रिवाज था। परन्तु डोडी ने मूल्यों की रक्षा करने हेतु गदलने विवाह नहीं किया। उसने सोचा "मैं बुड्ढा हूँ। डरता था, जब हँसेगा। बेटे सोंचेंगे, शायद चाचा का अम्मा से पहले से ही नाता था, तभी तो चाचा ने दूसरा ब्याह नहीं किया। भैया की भी बदनामी होती न ?"[1] फिर सवाल उठता है कि इतने बडे परिवार को दोडकर गदल एक बत्तीस साल के लौहारे गूजर के यहाँ जाकर क्यों बैठी? उसका जवाब गदल ने यह दिया किया "मेरा नया मरद है न? मरद है। इतनी सुन तो ले भला। मुझे लगता है, तेरा भइया ही फिर मिल गया है मुझे। तू?... मरद है? अरे कोई बैयर से घिघियाता हैं। बढकर जो तू मुझे मारता, तो मैं समझती, तू अपनापा मानता हैं।"[2] उस समय मूल्य की ओर गदल का इशारा हैं। उस काल में मर्द वही माना जाता जो अपनी जोरू को पीटता हो। देकर को गदल चाहती थी पर उसका घिघियाना उसे पसन्द नहीं था। दूसरी बात देवर को उसी दिन उसे अपने घर में बसाना चाहिए था। वह पेट के लिए पराई ड्योढी न लाँघती। जिस घर में जब उसका पति नहीं रहा तब वह क्योंकर रहेगी? "चूल्हा मैं तब फूँकूँ, जब मेरा केई अपना हो। ऐसी बाँदी नहीं हूँ

Scanned by CamScanner